मैं शिव हूँ ज्ञान का सागर नहीं हूँ जानी
जाननहार
पतित से पावन बनाने का करूं मैं सब पर
उपकार
तुम्हीं हो देवात्माएँ बताऊं मैं तुम्हारी असली
पहचान
आदि स्वरूप स्मृति में लाओ बनो ना इससे
अनजान
विश्व सेवाधारी बनकर करते रहो विश्व सेवा
निरंतर
अपनी अचल अडोल अवस्था में आए ना कोई
अंतर
माया से रहना सावधान ये है बड़ी खतरनाक
चोरनी
आत्मिक अवस्था चुरा लेगी वो बनकर मीठी
मोरनी
धधक रही चारों और पांच विकारों की भीषण
आग
अपने रजिस्टर पर ना लगने देना विकर्मों का

दाग
याद की तीखी दौड़ी पहनो बन जाओ अखंड
साधक
पांच विकार नहीं बनेंगे कभी आपके मार्ग में
बाधक
चलते चलते कहीं तुम साइड सीन में मत खो
जाना
माया की लोरी सुनकर अज्ञान निद्रा में ना सो
जाना
आपकी चलन से सब समझें आपको सम्पन्न
मूरत
अपनी शुद्ध वृत्ति से दिखाओ खुद में बाप की
सूरत
ईश्वरीय शक्तियों को बनाओ अपने जीवन का
अंग
दिल से तुम बजाते ही जाओ ज्ञान योग का
मृदंग
अर्जुन वही कहलायेगा जो बाबा की श्रीमत को
औटे